

# संकल्पवान और संकल्पहीन

**इन्द्रियों की आदत है, ये एक विषय से दूसरे विषय पर एक पल में खिसक जाती हैं और इनको उकसाता है मन। अगर मन वश में है तो आँख, ताकत नहीं कि वो किसी विषय पर अटके। मन पीछे बैठकर कहता है कि इसे देखते ही रहना, पीछे हटना नहीं, तो आँख को मन का सहयोग मिल जाता है। आत्मा यदि कहती है कि यहाँ से हटो, यह गलत है, तो भी आँख मानती नहीं, क्योंकि मन आकर्षित है। तो आत्मा पहले मन को हटाये, मन को विश्वास में ले।**

किसी ने सत्य कहा है, 'यह दुनिया संकल्पवानों की है, संकल्पहीन तो यूँ ही भूमि का भार बढ़ाया करते हैं।' जैसे बलवान और बलहीन का अंतर स्पष्ट है, वैसे ही किसी भी परिस्थिति में, प्रतिकूलता में भी जो धारण किये हुए श्रेष्ठ संकल्पों को दृढ़ता से पकड़े रहता है, उनको क्रियान्वित करता रहता है, वह है संकल्पवान और जो विपरीत परिस्थितियों के झोंकों में या अलबेलेपन में या लापरवाही में अपने श्रेष्ठ संकल्पों को त्याग देता है, भुला देता है या ढीला कर देता है, वह है संकल्पहीन।

संकल्प की दृढ़ता पर जीवन की उन्नति-अवनति निर्भर है। मजबूत संकल्प वाले की मंजिल की ओर गति द्रुत होती है, और संकल्प में ढीलापन आने से गति भी लंगड़ाती-लड़खड़ाती नज़र आती है, गति में भय और संशय दृश्यमान होता है, लगता है जैसे कोई ज़बरदस्ती घसीटे जा रहा है।

प्रश्न यह है कि संकल्प टूट क्यों जाता है, उसे मजबूत बनाने का उपाय क्या है? इसका उत्तर बड़ा सरल है। जो अपने लक्ष्य पर मन को टिकाता नहीं, बार-बार लक्ष्य का स्मरण करता नहीं, तो मन को अहसास होने लगता है कि शायद यह लक्ष्य महत्वपूर्ण नहीं है और वह कहीं भी खिसक जाता है। दूसरी बात, मन के सामने दो विकल्प हैं, एक तो वह लक्ष्य की ओर जाए और दूसरा इन्द्रियों के रसों में भटके। यदि मन इन्द्रियों की ओर भागता है तो शब्द, रस, रूप, स्पर्श के झूठे आकर्षणों में फँसकर लक्ष्य को भुला देता है।

इन्द्रियों पर नियंत्रण करके ही लक्ष्योन्मुख हुआ जा सकता है। तीसरी बात है, जो प्रतिकूलताओं को सहन नहीं कर पाता, वह भी लक्ष्य से विचलित हो जाता है।

**संकल्पवान का अर्थ है दृढ़ इच्छाशक्ति वाला :** 'दृढ़ता और ज़िद्द में अंतर है।' दृढ़ता सफलता का अधार है और ज़िद्दी कभी सिद्धि और प्रसिद्धि नहीं पा सकता। ज़िद्द के पीछे व्यक्ति का पूर्वाग्रह, पुराना संस्कार, स्वार्थ मैं-पन आदि होता है। वो संस्कार उसे उद्दीप्त करता है और वह परिणामों को नज़रअंदाज़ करके भी अपनी बात, अपने विचार, अपने दृष्टिकोण को ऊपर रखता है। यदि कोई बाधक बनता है तो वह क्रोध करता है, शत्रुता ठान लेता है। इस प्रकार वह नकारात्मकता के वशीभूत होता है। इतिहास में कई लोगों की ज़िद्द के कुपरिणाम दर्ज हैं। मुहम्मद तुगलक ने राजधानी बदलने की ज़िद्द की, जिसके कुपरिणाम कइयों ने झेले। भारत-पाकिस्तान का विभाजन भी ज़िद्द का ही कुपरिणाम है। कोई शक्ति अर्जित करके ज़िद्दी हो जाये, तो परिणाम अधिक भयंकर हो जाते हैं। ज़िद्दी की भेंट में दृढ़ता वाला

अपने हृदय की पवित्र भावनाओं के सहारे आगे बढ़ता रहता है। किसी के भी प्रति कोई नकारात्मक भाव ना रख वह केवल लक्ष्य को सामने देख चलता जाता है। इस क्रम में कोई बाधक भी बनता है, तो भी न तो उसे क्रोध आता, न वो हतोत्साहित होता, न रुकता, बल्कि उसके प्रति रहम भाव रखकर उसे भी साथी और सहयोगी बना लेता है। अतः दृढ़ता की शक्ति से वो विजयी होता है और ज़िद्द वाला हार खा लेता है।

महात्मा गाँधी ने कहा है, 'मुट्टी भर संकल्पवान लोग, जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।' भारत की आज़ादी की लड़ाई के दौरान उन्होंने सन 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन चलाया और नारा दिया, 'करो या मरो।' सारा भारत इसमें कूद पड़ा इस भावना के साथ कि या तो आज़ादी लेकर छोड़ेंगे या मर मिटेंगे। जेलें भर गईं, जेलों में लोगों को डालने की जगह नहीं बची। जब उन्होंने दांडी यात्रा शुरू की,



तब भी कितनी दृढ़ता थी! शरीर की आयु बड़ी थी, लेकिन चलने में सबसे आगे। इतना तेज़ चलते थे कि पीछे चलने वाले दौड़ते थे। तब भी उनका नारा था, 'चाहे मैं कुत्ते की मौत मरूँ, चाहे मैं कौए की मौत मरूँ, पर नमक कानून भंग करूँगा।' गर्मी में चले, कांटों पर भी चले, पत्थरों पर भी चले, भूखे-प्यासे भी चले, अकेले भी चले, पर दृढ़ता के साथ चले। लोग पेड़ों पर चढ़कर देखते थे। शरीर की कोई सजावट नहीं, पर भीड़ में घिर जाते थे। ताकत किसमें थी? संकल्प में ताकत थी। उस ताकत ने भारत को आज़ाद करा दिया। अब हमारे सामने भी एक बहुत बड़ी मंजिल है... पहले हम खुद को तो आज़ाद करें! हमारी लड़ाई तो अपने आप से है। एक प्रसंग के अनुसार... एक बार एक किसान के गोदाम में बहुत सारे चूहे घुस गए और अनाज खराब करने लगे। किसान ने लोहे का एक बड़ा पिंजरा बनवाया, उसमें चूहे फँसने लगे। एक दिन एक बहुत मोटा चूहा फँस गया। उसे बड़ा बुरा लगा कि मैं तो बंधन में आ गया। उसने उछल-कूद बहुत मचाई, इससे पिंजरा खिसकने लगा। उसको

लगा कि मैं खिसकाते-खिसकाते इसे बाहर ले जा सकता हूँ और सचमुच वो गोदाम से बाहर जंगल में आ गया। उसे बड़ी खुशी हुई कि मैं गोदाम के बंधन से छूट गया। गोदाम से तो बाहर आ गया, लेकिन पिंजरे में तो अभी भी था। हम सब भी कई गोदामों से तो बाहर आ गए हैं, लेकिन पिंजरे में तो अभी भी हैं! वो पिंजरा कौन-सा है? खुद के कमज़ोर संस्कारों का, स्वभाव का, खुद की आदतों का। गोदाम का बंधन तो बहुत बड़ा था, दिखता था, पर यह पिंजरे का बंधन सूक्ष्म है, दिखता नहीं। इस पिंजरे से बाहर आने के लिए चाहिए मुक्ति के प्रति दृढ़ संकल्प शक्ति। इसके लिए पहले अपनी चेकिंग करनी है और फिर अपने को बदलना है।

परमात्मा ने कहा है, अपने को बदलने के लिए चाहिए अपने मन के ऊपर राज्य। मन फिसलने लगे तो हम इसे रोकें। हम बार-बार देखें कि मन कहाँ गया? मैंने संकल्प क्या किया था, फिर ढीला कैसे हो गया? जैसे गाड़ी चलाना सीखने वाला ध्यान रखता है कि क्या मैं इसे सड़क पर चला रहा हूँ? यह सड़क से नीचे कैसे उतर गई! वो उसे फिर सड़क पर लायेगा। गाड़ी फिर नीचे घास में रेत में जाएगी, फिर सड़क पर लायेगा और ऐसे करते-करते वह कुशल हो जायेगा। मन भी ऐसे है। हम इसे मंजिल की ओर ले जाते हैं, यह फिर फिसल जाता है। अतः हमारा अधिकतम ध्यान

इस बात पर चाहिए कि मन क्या कर रहा है? कहाँ गया? क्यों गया? मेरा निर्णय ठीक है? मैं संस्कारों के वशीभूत तो नहीं हूँ? मेरे संस्कारों को कुसंग तो नहीं लगा? मेरे मूल संस्कार कौन-से हैं? क्या मेरे मूल संस्कार कर्म में आये या कोई मिलावट हुई? इन्द्रियों की आदत है, ये एक विषय से दूसरे विषय पर एक पल में खिसक जाती हैं और इनको उकसाता है मन। अगर मन वश में है तो आँख, ताकत नहीं कि वो किसी विषय पर अटके। मन पीछे बैठकर कहता है कि इसे देखते ही रहना, पीछे हटना नहीं, तो आँख को मन का सहयोग मिल जाता है। आत्मा यदि कहती है कि यहाँ से हटो, यह गलत है, तो भी आँख मानती नहीं, क्योंकि मन आकर्षित है। तो आत्मा पहले मन को हटाये, मन को विश्वास में ले। परमात्मा कहते हैं, संकल्प को मोड़ो, संकल्प को बचाओ, संकल्प व्यर्थ गया तो सारी शक्ति व्यर्थ चली जाएगी। जब भी एकांत में बैठो, अपने तीनों अनादि साथियों (मन, बुद्धि, संस्कार) को पुचकारो, उनको प्यार करो, उनका हाल-चाल पूछो, उनकी दिशा की जाँच करो।



**वांभवडे-महा.**। नौ गांवों के 'सरपंच, उपसरपंच तथा सदस्यों के सत्कार एवं स्वागत कार्यक्रम' में उनके साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब.कु. संगीता तथा ब.कु. वसंत।



**सातारा-महा.**। सार्वजनिक बांधकाम मंडल सातारा कार्यालय के सहायक अधीक्षक अभियंता अतुल सुलाखे के सेवाकेन्द्र आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब.कु. शांता।



**कोवाड-महा.**। 'एक अद्भुत जीवन गाथा' विषयक कार्यक्रम में अपना अनुभव सभी के साथ साझा करते हुए ब.कु. पंचम सिंह। साथ है जेड. पी. मेम्बर कला जाना भोगन, ब.कु. शिवाली, डॉ. कौमुदी डेपोडी, सरपंच विष्णु आडाव तथा अन्य।



**छत्तरपुर-म.प्र.**। राष्ट्रीय बाल विकास योजना के अंतर्गत थाना बमनौरा कला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय बालिका दिवस समारोह में 'सम्मान सुरक्षा-स्वराक्षा सम्वाद' विषय पर अपना वक्तव्य देते हुए ब.कु. नीतू। मंचासीन हैं थाना प्रभारी विक्रम सिंह चौहान, सरपंच अरविंद जैन, प्राचार्य वीरेन्द्र देव, करनी सेना सचिव भक्तिराजा बुंदेला तथा अन्य।



**संगमनेर-महा.**। 'रास्ता सुरक्षा अभियान' के दौरान बस डिपो में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में बस डिपो मैनेजर वर्षे मैडम, ट्रैफिक पुलिस उंबरकर जी, ब.कु. भारती, ब.कु. पदमा तथा अन्य।



**हुबली-गांधीनगर।** रेलवे स्टेशन पर कुली भाइयों को गुटका-तम्बाकू सेवन के दुष्परिणाम बताने एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब.कु. लता।